अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
⊙	अवसर की चूक (चित्रकथा)	5
1.	शक्ति और क्षमा (कविता)	8
2.	विक्रमादित्य का सिंहासन (कहानी)	15
3.	अतिथि देवो भवः (एकांकी)	22
4.	स्नेह-शपथ (कविता)	30
5.	अमरनाथ की यात्रा (यात्रा-वृतांत)	36
6.	सरोजिनी नायडू (जीवनी)	44
7.	क्या निराश हुआ जाए? (निबंध)	50
8.	दोहावली (कविता)	58
9.	काकी (कहानी)	65
10.	इब्राहिम गार्दी (कहानी)	71
11.	सम्मान (कहानी)	79
12.	दीवानों की हस्ती (कविता)	87
13.	एनी बेसेंट (जीवनी)	94
14.	भगत सिंह के पत्र (पत्र)	102
15.	आदर्श माता जीजाबाई (कहानी)	108
16.	तात्या टोपे (संवाद)	116
✶	स्वमूल्यांकन पत्र-1	125
✶	स्वमूल्यांकन पत्र-2	127

EDITION INTERNATIONAL

अध्याय

अवसर की चूक
(चित्रकथा)

एक बार एक धोबी अपने गधे पर सामान लादकर शहर से लौट रहा था। रास्ते में उसे एक चमकदार पत्थर दिखाई पड़ा। उसने पत्थर को उठाकर गधे के गले में बाँध दिया।

तभी दूसरी तरफ़ से एक जौहरी घोड़े पर सवार होकर वहाँ से गुज़र रहा था, उसकी नज़र गधे के गले में बँधे उस चमकते पत्थर पर पड़ी। वह उस पत्थर को देखते ही समझ गया कि यह कोई साधारण पत्थर नहीं बल्कि हीरा है। उसने धोबी से कहा...

धोबी ने संकोच के साथ कहा...

जौहरी बहुत कंजूस और लालची था। उसने सोचा कि धोबी को कुछ पता तो है नहीं, इसलिए जौहरी यह सोचकर आगे बढ़ने लगा कि धोबी के लिए तो यह सिर्फ़ साधारण पत्थर है और वह अभी स्वयं मुझे बुलाकर यह पत्थर चार आने में दे देगा।

अभी पहला जौहरी थोड़ी दूर बढ़ा ही था कि वहाँ एक दूसरा जौहरी आ पहुँचा। उसने भी गधे के गले में बँधा पत्थर देखा और पहचान गया कि वो हीरा है। जौहरी बोला...

दूसरे जौहरी ने बिना समय गँवाए धोबी को आठ आना दिए और वह कीमती पत्थर हासिल कर लिया।

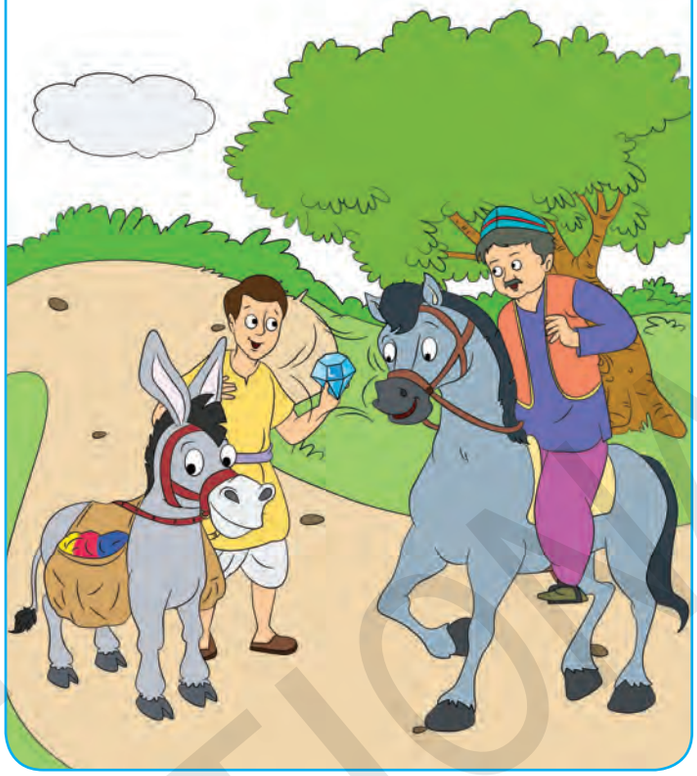

कुछ दूर जाकर पहले जौहरी ने अपना विचार बदला और यह सोचकर लौटने लगा कि वह ''आठ आना देकर ही वह हीरा खरीद लेगा।''

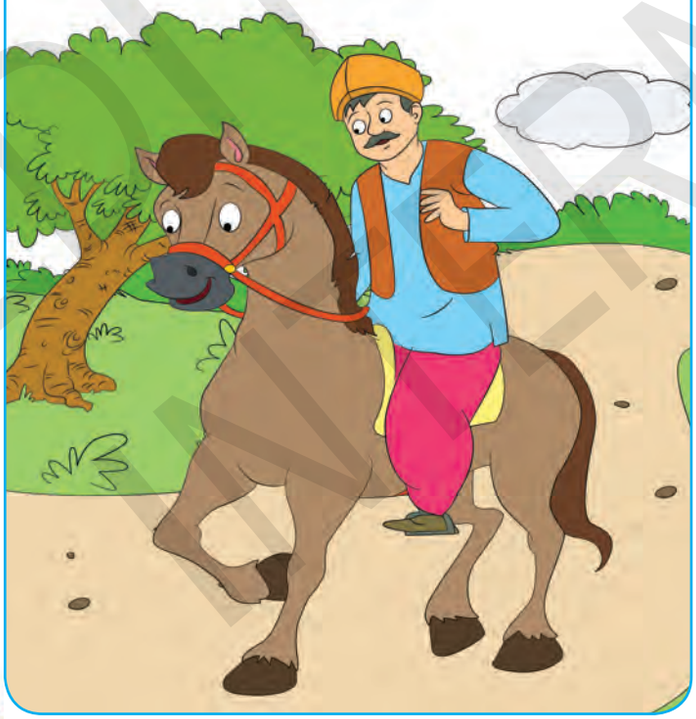

लेकिन जब तक वह धोबी के पास पहुँचा, हीरा तब तक बिक चुका था। दूसरे जौहरी के वहाँ से चले जाने के बाद उसने धोबी से कहा..

EDITION NOT FOR COMMERCIAL

जौहरी अब पछताने लगा, उसे धोबी पर गुस्सा आ रहा था। उसने धोबी से कहा.....

धोबी हैरानी में पड़ गया। उसने कहा.....

शिक्षा: समय रहते हमें अपने कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए क्योंकि समय बीत जाने पर पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं लगता।

EDUCATIONAL INTERNATIONAL

अध्याय 1

शक्ति और क्षमा
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

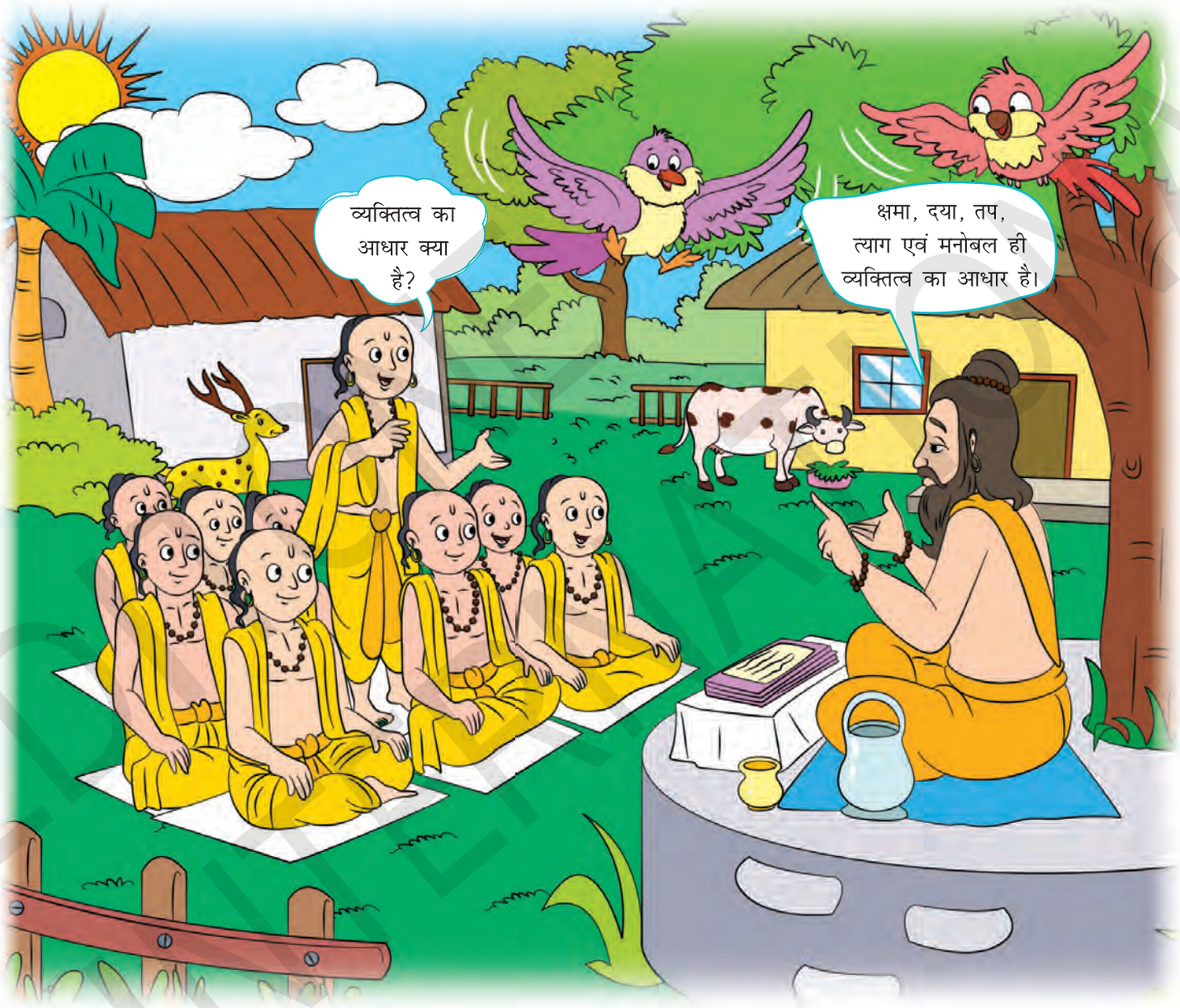

कविता का मूल तत्व

शक्ति के बिना किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है।

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा।
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे,
कहो, कहाँ, कब हारा।

क्षमाशील हो रिपु-समक्ष तुम,
विनत हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको,
कायर समझा उतना ही।

अत्याचार सहन करने का,
कुफल यही होता है।
पौरुष का आतंक मनुज,
कोमल होकर खोता है।।

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत सरल हो।

तीन दिवस तक पथ मांगते,
रघुपति सिंधु-किनारे।
बैठे पढ़ते रहे छंद,
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

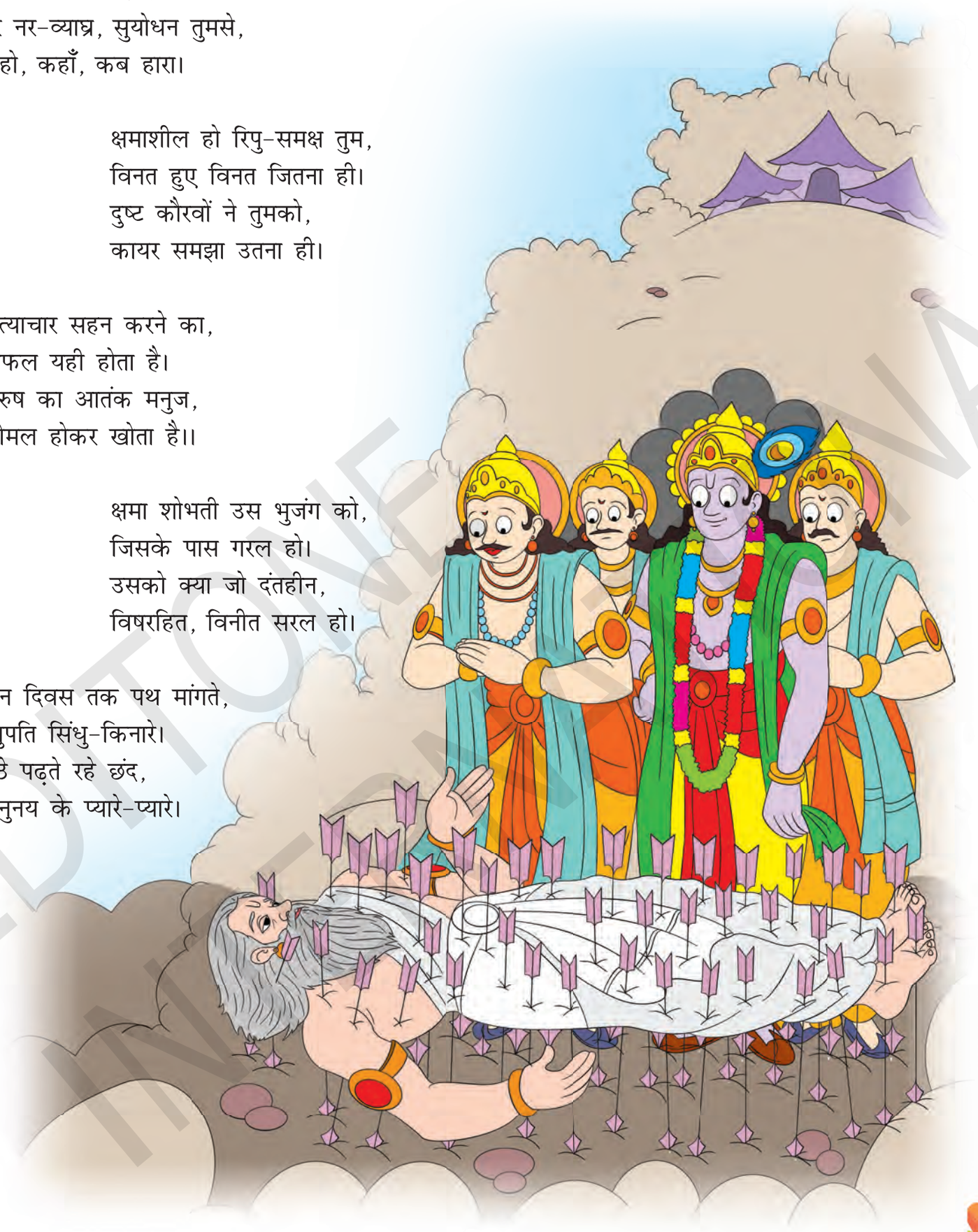

उत्तर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।
उठी अधीर धधक पौरुष की,
आग राम के शर से।।

सिंधु देह धर त्राहि-त्राहि,
कहता आ गिरा शरण में।
चरण पूज दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बंधन में।।

सच पूछो तो, शर में ही,
बसती है दीप्ति विनय की।
संधि-वचन समपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।।

सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके,
पीछे जब जगमग है।।

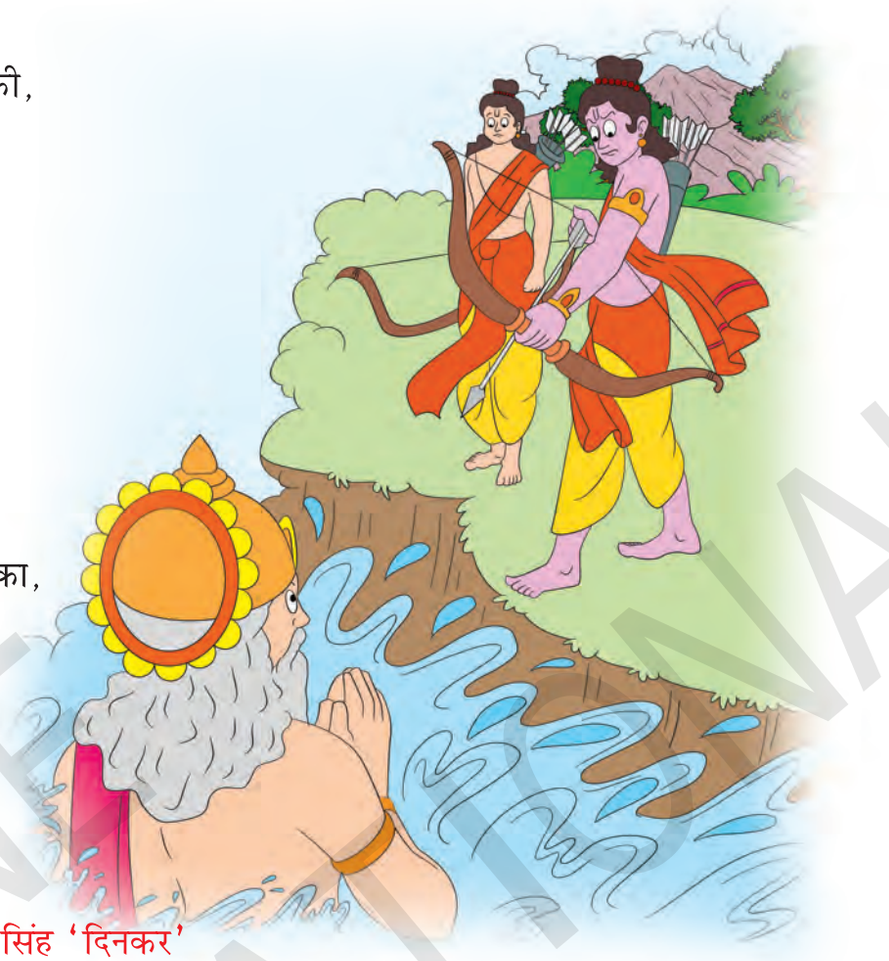

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

नर-व्याघ्र	=	मनुष्यरूपी सिंह	अनुनय	=	खुशामद
मूढ़	=	मूर्ख	भुजंग	=	साँप
शर	=	बाण	गरल	=	विष
रिपु	=	शत्रु	संधिवचन	=	सुलह की बातें
नाद	=	शब्द			

उच्चारण करें

समपूज्य	त्राहि-त्राहि	ग्रहण	सहनशीलता	क्षमाशीलता
दंतहीन	अधीर	सुयोधन	मनोबल	

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता के माध्यम से लक्ष्य को हासिल करने के विषय में बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) प्रस्तुत कविता में रघुपति किस से पथ माँगते हैं?

(ख) पुरुषार्थ की पहचान किन मूल्यों से होती है?

(ग) रघुपति की शरण में त्राहि-त्राहि कर कौन आ गिरा?

(घ) विजय शक्ति की प्राप्ति कैसे संभव है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रस्तुत कविता की पृष्ठभूमि क्या है एवं वक्ता की भूमिका का निर्वाहन किसने किया है?

.....

(ख) क्षमावान शत्रु यदि सामने हो तो युद्ध का परिणाम क्या होगा?

.....

(ग) युधिष्ठिर ने दुर्योधन को किन गुणों का सहारा लेकर हराया?

.....

(घ) शत्रु किससे भयभीत होकर नतमस्तक हो जाता है?

.....

3. कविता की छूटी हुई पंक्तियाँ पूरी कीजिए।

(क) उत्तर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।

.....

.....

(ख) क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।

.....

.....

EDITONE INTERNATIONAL

(ग) सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।

.....

.....

4. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) किसके बिना क्षमा आदि गुण शोभित नहीं होते?

☐ धन ☐ राज्य ☐ शक्ति ☐ क्रोध

(ख) जग कब पूजता है?

☐ जब बल दर्प हो ☐ जब जगमग हो ☐ जब विनय हो ☐ जब ये तीनों हो

(ग) तीन दिवस तक सिंधु से किसने पथ माँगा?

☐ समुद्र ने ☐ रघुपति ने ☐ दुर्योधन ने ☐ युधिष्ठिर ने

(घ) दुर्योधन-

☐ क्षमाशील था ☐ विनयी था ☐ हिंसक था ☐ स्वार्थी था

5. सही कथन पर (✓) का अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) श्रीराम जी के धनुष पर बाण चढ़ाने से समुद्र त्राहि-त्राहि करने लगा। ☐

(ख) शक्ति के बिना नम्रता और प्रार्थना का कोई आदर नहीं करता। ☐

(ग) प्रस्तुत कविता के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। ☐

(घ) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव प्रलोभन एवं शक्ति है। ☐

6. सही मिलान कीजिए।

(क)	भुजंग	(i)	शर
(ख)	धनुष	(ii)	सिंधु
(ग)	संधि-वचन	(iii)	गरल
(घ)	नर-व्याघ्र	(iv)	सुयोधन

Critical Thinking

7. प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव क्या है? और क्यों है? सोचकर लिखिए।

.....

.....

EDITONE INTERNATIONAL

8. दुर्योधन युधिष्ठिर के क्षमा, दया, विनीत और नम्र आदि गुणों को क्या समझता था? कक्षा में चर्चा कर अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

9. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताइए।

(क) शत्रु – ....

(ख) विष – ....

(ग) बाण – ....

(घ) समुद्र – ....

EDITONE INTERNATIONAL

10. दिए गए शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए।

(क) नर – ..... (ख) क्षमा – .....

(ग) दया – ..... (घ) शक्ति – .....

(ङ) सिंधु – ..... (च) बाण – .....

(छ) रघुपति – ..... (ज) त्याग – .....

(झ) व्याघ्र – ..... (ञ) गौरव – .....

11. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) उल्लास – ..... (ख) युधिष्ठिर – .....

(ग) कदापि – ..... (घ) दंतहीन – .....

12. दिए गए शब्दों में उपसर्ग पहचानकर लिखिए।

(क) पौरुष – ..... (ख) अनुनय – .....

(ग) सुयोधन – ..... (घ) अधीर – .....

13. दिए गए शब्दों की वर्तनी को शुद्ध रूप में लिखिए।

(क) दिप्ती – ..... (ख) भूजंग – .....

(ग) सकक्षम – ..... (घ) गृहन – .....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

14. श्रीराम जी के उन गुणों को बताइए जिसके कारण उनके बल का दर्प जगमगाता है।

15. दुर्योधन अपने किन दोषों के कारण हार गया था? नाम बताइए।

16. कविता के आधार पर बताइए निम्न प्रकृति किससे संबंधित है?

(क) क्षमावान – ..... (ख) नर-व्याघ्र – .....

(ग) मूढ़ – ..... (घ) दयालु – .....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

17. 'शक्ति और क्षमा' जैसे मूल्यों का सदैव परिस्थिति अनुसार ही उपयोग करना चाहिए। आप किन-किन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?

EDTONE INTERNATIONAL

अध्याय 2

विक्रमादित्य का सिंहासन
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

चंद्रगुप्त मौर्य

राजा कृष्णदेव राय

सम्राट अशोक

सम्राट मिहिरभोज

❖ उपरोक्त चित्र में दिए गए राजाओं के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

कहानी का मूल तत्व

सम्राट विक्रमादित्य की तरह हमें भी न्यायप्रिय होना चाहिए।

EDITION INTERNATIONAL

विक्रमादित्य के नाम से सभी लोग परिचित हैं। वह भारत के गौरवातीत सर्वोत्तम सम्राटों में से एक रहे हैं। उनका शासनकाल भारतवर्ष के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। विक्रम संवत् का आरंभ उसी से होता है। यद्यपि विक्रमादित्य का नाम इतना प्रसिद्ध है, परंतु आश्चर्य है कि हम उनके जीवन के विषय में कुछ तथ्यपरक जानकारी नहीं रखते।

विक्रमादित्य के विषय में कुछ निर्विवाद बातें लोगों के मन में घर कर गई हैं। जो उसके विषय में प्रचलित कहानियों के माध्यम से खुद को मनोरंजित करते हैं। उन्होंने अपनी प्रजा के साथ निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय किया। उन्हें ज्ञानी लोगों से अधिक प्रेम था जिन्हें वह अपने दरबार में विलक्षण प्रतिभा के रूप में रखते थे।

ऐसा माना जाता है कि विक्रमादित्य ने कभी किसी निर्दोष को दंडित नहीं किया। न्याय करने में वह कभी धोखा नहीं खा सके। अपराधी को जब विक्रमादित्य के सामने लाया जाता था, तो वह दंड के भय से काँपने लगता था। अपराधी को इस तथ्य का पता होता था कि विक्रमादित्य की आँखें उसके अपराध को पहचान ही लेंगी। लोग अपनी समस्याओं का उत्तम समाधान विक्रमादित्य के माध्यम से ही कर पाते थे। उसके पश्चात् भी यदि भारत में कोई न्यायाधीश अपनी पूर्ण योग्यता से निर्णय सुनाता था, तो उसके बारे में कहा जाता था कि वह विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठा होगा।

विक्रमादित्य ने अपने राज्य की राजधानी उज्जैन को बनाया था। प्राचीनकाल में उज्जैन नगरी कला और संस्कृति का केंद्र थी। परंतु समय के साथ-साथ इस नगरी के महत्व को लोग भूलते गए। जिस न्याय-सिंहासन पर बैठकर विक्रमादित्य न्याय किया करते थे, उसे भी समय के चलते लोग विस्मृत करते गए। उनका स्वर्णिम काल गए जमाने की बात हो गई। विक्रमादित्य का पुराना किला मात्र अवशेष बनकर रह गया है, जिसके टूटे-फूटे खंडहरों पर घास और वृक्ष उग आए हैं। एक समय की बात है निकटवर्ती गाँवों के लोग सायंकाल के समय गुजरते हुए वहाँ (किले के आसपास) ठहर जाते थे। पशु चरवाहे उसके चारों ओर एकत्र हो जाते और खेलने के पश्चात् एक साथ घर लौटते थे। उज्जैन के पास गाँवों के चरवाहों के लड़के चारागाह में हँसी-मज़ाक करके समय गुजारने के अनुभवी थे। वे दिन भर खेलते रहते और मवेशी चरा कर अपना पेट भरते थे।

एक दिन बच्चों को खेलने के लिए मनोहारी मैदान मिल गया। ऊबड़-खाबड़ मैदान वृक्षों के बीच स्थित था। मैदान के बीच में स्थित टीला किसी न्यायाधीश के सिंहासन की तरह लग रहा था। एक लड़का दौड़कर सिंहाहन पर जा बैठा और बोला, "लड़को, मैं अब न्यायाधीश बनूँगा और तुम सब अपने मुकदमे मेरे पास लाओगे। मैं तुम्हारी सुनवाई करूँगा।" दूसरे लड़के ने जब यह तमाशा देखा तो वह झगड़ा करने लगा। प्रत्येक दल ने अपनी-अपनी बात कही। एक ने कहा- "अमुक खेत हमारा है।" और दूसरे ने कहा-

"नहीं, हमारा है।" इस प्रकार वे कहते गए। वे सब चाहते थे कि वह इस झगड़े को निपटाए। तभी वहाँ के वातावरण में परिवर्तन हुआ। सभी को विचित्र-सा अहसास हुआ। टीले पर बैठने से पहले जो लड़का साधारण दिखाई देता था, अब बिल्कुल भिन्न दिखाई दे रहा था।

वह शांत और गंभीर हो गया था और उसकी बातचीत का ढंग तथा मुखमुद्रा इतने अद्‌भुत और प्रभावशाली हो गए थे, कि शेष लड़के उससे आतंकित हो गए थे। फिर भी उन्होंने सोचा कि यह केवल मज़ाक है और फिर एक नया मुकदमा उसके सामने रखा और एक बार फिर उसने अपना निर्णय सुना दिया। इस प्रकार घंटों तक यह क्रम चलता रहा। न्यायाधीश के सिंहासन पर बैठा हुआ वह उसी गंभीरता से लौटने के समय तक शिकायत सुनकर निर्णय देता रहा और फिर अपने स्थान से नीचे कूदा और दूसरे चरवाहा लड़कों के समान हो गया।

इसके बाद से वह चरवाहे का लड़का इतना प्रसिद्ध हुआ कि सभी पेचीदा झगड़े उसके सामने रखे जाते थे और बार-बार वैसा ही होता था। जब वह उस स्थान से नीचे उतरकर आता तो उसमें और अन्य लड़कों में कोई अंतर न होता था।

धीरे-धीरे निकट-दूर सभी गाँवों के बड़ी अवस्था के सभी स्त्री-पुरुष अपने झगड़े उस चरवाहे के लड़के के सामने लाने लगे और वहाँ सदैव उन्हें ऐसा निर्णय मिलता था, जिसे दोनों दल मान लेते थे और संतुष्ट होकर चले जाते थे।

अपनी राजधानी में बैठकर जब ऐसी ख़बरों का आभास राजा के कानों में पड़ा तो उसने तुरंत अनुमान लगा लिया कि वह ज़रूर राजा विक्रमादित्य का न्याय सिंहासन होगा। फिर वह विचार-मग्न होकर सोचने लगा कि पत्थर पर बैठने मात्र से लड़के में न्यायिक ज्योति आ सकती है, तो हमें क्यों न गहराई में खोदकर सिंहासन ढूँढ़ लेना चाहिए। तत्पश्चात् मैं भी विवादों का श्रवण करके न्याय-निर्णयन करूँगा।

कुदालों और फावड़ों से वह घास का टीला खोदा गया। वह लड़का जो स्वयं न्यायाधीश बनता था, बड़ा दुखी हुआ। उसने ऐसा अनुभव किया जैसे- उसकी कोई अति प्रिय वस्तु उससे छीनी जा रही हो। अंत में श्रमिकों ने कोई वस्तु देखी। उन्होंने उसे खोला तो उसके नीचे काले संगमरमर का चौकोर तख़्त पाया, जो पत्थर के बत्तीस देवदूतों के हाथों और पंखों पर टिका हुआ था। अवश्य ही वह विक्रमादित्य का सिंहासन था। खुशी-खुशी उसे नगर में लाया गया और न्याय-कक्ष में रखा गया। राजा ने अपनी प्रजा को तीन दिन तक उपवास रखने और प्रार्थना करने का आदेश दिया और घोषणा की, कि चौथे दिन वह सार्वजनिक रूप से इस सिंहासन पर बैठेगा।

अंत में वह दिन आया। राजा को अपना सिंहासन ग्रहण करते हुए देखने के लिए भारी भीड़ जमा हो गई। एक बड़े कक्ष से होते हुए राजा के साथ राज्य के पुरोहित तथा सेनापति भी आए। जब वे सिंहासन के पास आए तो दो पंक्तियों में बँट गए। राजा उनके बीच से गुजरे। जब राजा सिंहासन पर बैठने वाले थे, तो उनमें से एक देवदूत ने बोलना शुरू किया। उसने कहा- "रुको! क्या तुम स्वयं को विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठने के योग्य समझते हो? क्या तुमने ऐसे राज्यों पर शासन करने की इच्छा नहीं की, जो तुम्हारे नहीं थे?"

थोड़ी देर तक राजा कोई उत्तर न सोच सका। वह जानता था कि उसका जीवन न्यायपूर्ण नहीं था। बहुत देर तक चुप रहने के बाद वह बोला- "नहीं, मैं इसके योग्य नहीं हूँ।" देवदूत ने कहा- "तो फिर जाओ और तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करो जिससे तुम स्वयं को पवित्र कर सको और सिंहासन पर बैठने योग्य बन सको।" ये शब्द कहकर उसने अपने पंख फैलाए और उड़ गया।

राजा ने पुनः व्रत और प्रार्थना करके स्वयं को विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठने योग्य बनाया। परंतु इस बार भी वैसा ही हुआ। पत्थर के दूसरे देवदूत ने पूछा कि क्या उसने कभी दूसरों की धन-संपत्ति लेने की नहीं सोची? राजा ने स्वीकार किया कि उसने ऐसा किया है और इसलिए वह सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं है। इस प्रकार जब भी राजा ने सिंहासन पाने की चेष्टा की, उससे किसी-न-किसी देवदूत ने प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक उस पत्थर को पकड़े केवल एक देवदूत रह गया। राजा बड़े आत्मविश्वास के साथ सिंहासन के पास गया, क्योंकि उसे लग रहा था कि उस दिन उसे अवश्य ही अपना स्थान ग्रहण करने की अनुमति मिल जाएगी।

परंतु जैसे ही वह सिंहासन के पास पहुँचा, अंतिम देवदूत बोला- "ऐ राजा! क्या तुम्हारा हृदय बच्चे के समान बिल्कुल शुद्ध है? यदि ऐसा है तो तुम वास्तव में सिंहासन पर बैठने योग्य हो।"

राजा ने बहुत धीरे-से कहा- "नहीं, नहीं! मैं इस योग्य नहीं हूँ।" यह सुनते ही देवदूत उस सिंहासन को अपने सिर पर रखकर आकाश में उड़ गया।

इस प्रकार विक्रमादित्य का न्याय-सिंहासन सदा के लिए पृथ्वी से लुप्त हो गया।

शब्दार्थ

तथ्य	=	आवश्यक बातें, जिनसे सूचनाएँ प्राप्त हों	निकटवर्ती	=	समीप के, नज़दीक के
मनोहारी	=	आकर्षक, मन को अच्छे लगने वाले	निर्णय	=	फ़ैसला
मुकदमा	=	वाद, विवाद	न्यायाधीश	=	न्याय करने वाला

उच्चारण करें

विक्रमादित्य गौरवातीत आश्चर्य न्यायाधीश प्राचीनकाल

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को विक्रमादित्य की जीवन-गाथा से अवगत कराएँ।

EDITONE INTERNATIONAL

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) विक्रमादित्य में किस प्रकार की अद्‌भुत योग्यता थी?

(ख) प्रसिद्‌ध सम्राट विक्रमादित्य अपने दरबार में किस प्रकार के लोगों को रखते थे?

(ग) प्राचीनकाल में उज्जैन को किस प्रकार की प्रसिद्‌धि हासिल थी?

(घ) पत्थर के सिंहासन पर बैठकर चरवाहा किस प्रकार की मुखमुद्रा का अनुसरण कर लेता था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विक्रमादित्य के सम्मुख लाया गया अपराधी किस तथ्य से परिचित होता था?

.....

(ख) राजा किस प्रकार की ख़बरों को सुनकर उत्तेजित हो उठा?

.....

(ग) राजा के सिंहासनरूढ़ होने के पूर्व पहले देवदूत ने क्या प्रश्न किया?

.....

(घ) अंतिम देवदूत, राजा से प्रश्न करके क्या व्यक्त करना चाहता था?

.....

(ङ) सिंहासन के नगर आगमन पर राजा ने क्या घोषणा की?

.....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) विक्रमादित्य ने कभी किसी ..... को दंडित नहीं किया।

(ख) राजा विक्रमादित्य का पुराना किला मात्र ..... बनकर रह गया है।

(ग) ..... पर बैठने से जो लड़का साधारण दिखाई देता था, अब बिल्कुल भिन्न दिखाई दे रहा था।

(घ) श्रमिकों ने जब अति प्रिय वस्तु को खोला तो उसके नीचे ..... संगमरमर का चौकोर तख़्त पाया।

(ङ) जब भी राजा ने ..... पाने की चेष्टा की उससे, किसी-न-किसी देवदूत ने प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा।

EDITONE INTERNATIONAL

4. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी कहाँ स्थित थी?

☐ उज्जैन ☐ पचमढ़ी ☐ प्रयाग ☐ अवध

(ख) लड़का कौन-से अभिनय को करते हुए चेहरे को सीधा कर गंभीर मुद्रा में बैठ गया।

☐ सिपाही ☐ मंत्री ☐ न्यायाधीश ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) चारागाह के पास का खंडहर किस का महल हुआ करता था?

☐ भोज ☐ अशोक ☐ श्रीगुप्त ☐ विक्रमादित्य

(घ) राजा अपने जीवन के बारे में क्या जानता था?

☐ वह कभी सफल नहीं हुआ ☐ वह न्यायपूर्ण नहीं था

☐ वह निरर्थक था ☐ इनमें से कोई नहीं

5. सही वाक्य पर (✓) अथवा गलत वाक्य पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) राजा विक्रमादित्य निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय किया करते थे। ☐

(ख) टूटे-फूटे खंडहरों पर घास और वृक्ष उग आए थे। ☐

(ग) चरवाहे का लड़का सदैव एक ही भाव-भंगिमा में रहा करता था। ☐

(घ) टीले को खोदने के लिए कुछ विशेष प्रकार के यंत्रों का प्रयोग किया गया था। ☐

(ङ) राजा विक्रमादित्य का सिंहासन सदा के लिए पृथ्वी से लुप्त हो गया। ☐

6. सही मिलान कीजिए।

(क) सम्राट	(i) लड़के की
(ख) चरवाहे का लड़का	(ii) सिंहासन
(ग) विचित्र मुख-मुद्रा	(iii) बत्तीस
(घ) न्याय का	(iv) न्यायाधीश
(ङ) देवदूतों की संख्या	(v) विक्रमादित्य

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

7. सदाचारी एवं दुराचारी व्यक्ति एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न होते हैं? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए शब्दों को विच्छेदित करते हुए लिखिए।

(क) न्यायाधीश – ..... (ख) विक्रमादित्य – .....

(ग) सिंहासन – ..... (घ) उज्जैन – .....

EDTONE INTERNATIONAL

9. दिए गए शब्दों का शुद्धीकरण करके लिखिए।

(क) पूरौहित – ..... (ख) संसक्रति – .....

(ग) मूखमूदरा – ..... (घ) परतीभा – .....

10. दिए गए प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द निर्मित कीजिए।

(क) औटी – ....

(ख) इयल – ....

(ग) ऊ – ....

(घ) आप – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. अपने आसपास के वातावरण का अवलोकन करते हुए कोई एक कहानी का लेखन कीजिए।

12. अन्यायी राजा की तुलना में न्यायिक व्यक्ति की अधिक महत्ता होती है। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. वर्तमान न्यायपालिका को किस प्रकार वगीकृत किया गया है? लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

14. जहाँ व्यक्ति को निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय की आशा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं। आप इस गुण को अपने जीवन में किस प्रकार अनुसरित करना चाहेंगे?

EDITONE INTERNATIONAL